यंग प्लाटून का गठन : झारखण्ड अनुभव–2018

संजय आनंद लाठकर
पुलिस महानिरीक्षक

गौरव शर्मा
उप कमांडेंट

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की पहचान वर्षो से पूरे देश में कानून और व्यवस्था बनाये रखने में एक प्रमुख संकट मोचक बल के रूप में रही है। इसे स्वतंत्रता के समय से ही हमेशा सम्मान प्राप्त होता रहा है, किन्तु हाल के समय में इस बल की सर्वत्र उपस्थिति ने इसे अति भरोसेमंद बना दिया है। आंतरिक सुरक्षा की मुख्य जिम्मेदारी वहन करने के नाते इस बल ने लाल आतंक जैसी चुनौतियों का सामना जितने उत्साह और कुशलता के साथ किया है, वह समस्त केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में एक अद्वितीय मिसाल है।

माओवाद से टकराव

झारखण्ड राज्य से माओवाद के खतरे को समाप्त करने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो एक उत्कृष्ट उदाहरण है। वर्ष 2000 में इस राज्य के गठन के समय से ही यह हिंसक माओवाद के फलने–फूलने का गढ़ रहा है। वर्षो से हो रही दिल दहला देने वाली अनेक घटनाओं, जिनमें हथियारों की लूट–पाट, भीषण हत्याकाण्ड, आई.ई.डी. ब्लास्ट तथा अनियंत्रित तरीके से धन उगाही करना, इसका प्रमुख साक्षी रहा है। प्रारंभिक वर्षो में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कुछ ही बटालियने यहाँ तैनात थी। वर्ष 2009 में खून–खराबा अपने चरम सीमा पर था और उस समय झारखण्ड को इस बेड़ी से निजात दिलाने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल बटालियनों की तैनाती चरणबद्ध तरीके से बढ़ाई गई। यह वह समय था जब कोबरा की 02 बटालियने भी इस राज्य में खड़ी की गई।

माओवादियों के खातमे का आगाज

वर्ष 2013 के अंत तक 20 जीडी बटालियन तथा 02 कोबरा बटालियने यहां तैनात हो चुकी थी। इन्होंने झारखण्ड पुलिस के साथ लगातार आक्रमक अभियान चलाकर इस संकट से लोहा लिया और अगले कुछ वर्षो में माओवाद के इस तांडव रूप को काबू पाने में काफी हद तक कामयाब रहें। माओवादियों से संबंधित घटनाएं जो वर्ष 2009 में 742 थी वह वर्ष 2017 में सिमटकर केवल 198 रह गई। माओवादियों की शक्ति कम होकर छोटे–छोटे ग्रुपो में बट रही थी, जिसके अन्तर्गत उन्होनें लगातार अपना स्थान बदलने की रणनीति अपनाई तथा पुलिस मुखबिरों को निशाना बनाने लगे। पुलिस बलों के साथ सीधे टकराव से बचने लगे तथा लगातार मारे जाने, पकड़े जाने तथा आत्मसमर्पण करने के कारण वे पूरी तरह से हतोत्साहित हो चुके थे। सभी एजेंसियों के तालमेल से लगातार खुफिया जानकारी प्राप्त हो रही थी, जिससे माओवादियों का मनोबल गिरने लगा एवं बहुत सारे कैडर पार्टी छोड़ कर भागने लगे।

यंग प्लाटून को पुनर्जीवित करने की अवधारणा :–

अब समय की मांग थी कि और आक्रमक तरीके से अधिक दिलेरी के साथ आक्रमण किया जाए ताकि उनकी ताबुत में आखिरी कील ठोकी जा सके। बल की रेगुलर बटालियन में कार्मिकों की उम्र में बड़े फासले होने से अल्प समय के नोटिस पर शीघ्रता से ऑपरेशन चलाने में कठिनाई अनुभव की गई। दोनों कोबरा बटालियन के परिचालन क्षेत्र में प्रयास बढ़ाने की बहुत आवश्यकता थी। यह महसूस किया गया कि उपलब्ध जवानों में से तुलनात्मक रूप से युवा टुकड़ी उपलब्ध हो, जिसे प्रशिक्षण दिया जा सके, जिसकी विशेष पहचान हो और जिसके पास बेहतर युक्तिक सामर्थ्य हो। वर्षो से यंग प्लाटून की जो अवधारणा चली आ रही थी, उसे फिर से जीवंत करने की आवश्यकता महसूस हुई।

संसाधन सुव्यवस्थित करने की प्रकिया :–

राज्य में उपलब्ध 20 जीडी बटालियनें और उनकी 140 कम्पनियाँ (20 प्रशिक्षण कम्पनियों को शामिल करते हुए), में से एक समयबद्ध कार्यक्रम के अन्तर्गत, 140 यंग प्लाटूनों को तैयार करने हेतु, प्रति कम्पनी कम से कम 01 प्लाटून को प्रशिक्षित करने का विचार किया गया। सुचारू रूप से प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए 203 कोबरा बटालियन, बरही तथा 209 कोबरा बटालियन, खुंटी मुख्यालय में अतिरिक्त नोड्स स्थापित किये गये, जिससे कि वर्तमान में उपलब्ध आंचलिक प्रशिक्षण केन्द्र, मुसाबनी के प्रयासो को बढ़ाया जा सके। सेक्टर में उपलब्ध संसाधनों से प्रशिक्षण स्टाफ, प्रशासनिक साजो–सामान और पहले से मांग की गई अन्य प्रशिक्षण सामग्री को लिया गया। व्यापक चिंतन के पश्चात् 04 सप्ताह का पाठ्यक्रम तैयार किया गया, जिसमें वर्तमान जंगल युद्ध की युक्ति, माओवादी की बदली हुई कार्य प्रणाली को समझने, जी.पी.एस. तथा ओरक्स पर विशेष जोर देते हुए परिचालनिक गेजेट को हैन्डल करने की प्रवीणता, रेडियो इन्टरसैप्टर की जानकारी, फायरिंग में सुधार तथा रात्रि में नेवीगेशन की क्षमताओं, हेली स्लीथरिंग तथा बल की शारीरिक सहनशीलता को विकसित करने संबंधी विषयों को शामिल किया गया।

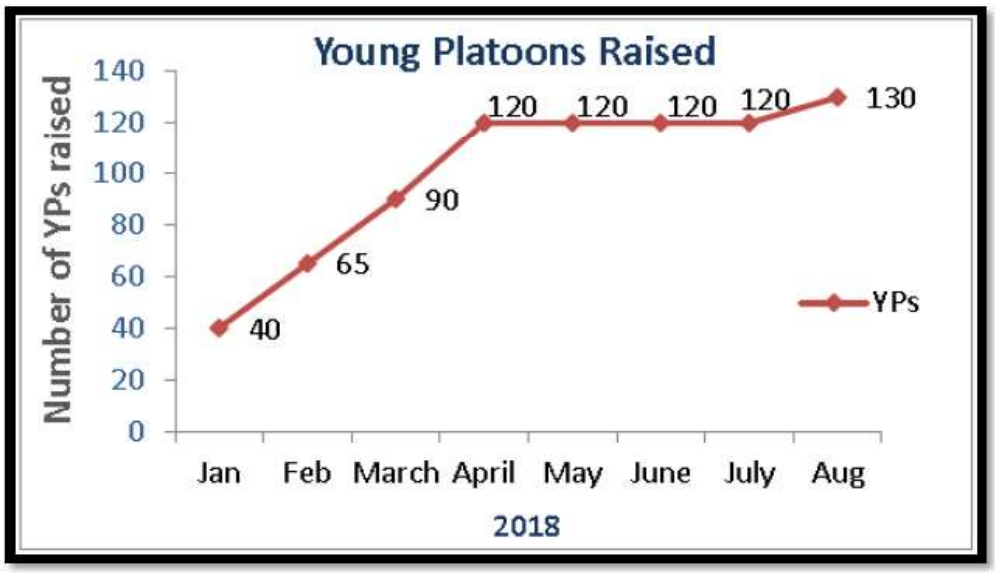

पहले बैच के लिए, 4 यंग प्लाटूनों को जैड.टी.सी. मुसाबनी तथा 08 यंग प्लाटून प्रत्येक 203 बटा0 मुख्यालय तथा 209 के मुख्यालय के लिए दिनाँक 08/11/2017 से शुरू होने वाले 04 सप्ताह के प्रशिक्षण के लिए चिन्हित की गयी। इनका साप्ताहिक आँकलन किया गया तथा जो इस प्रशिक्षण में पीछे थे उनके प्रदर्शन को सुधारने के लिए विशेष जोर दिया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य व्यक्तिगत क्षमताओं में वृद्धि के साथ–साथ टीम भावना को बढ़ाना था। 09 दिसम्बर ' 2017 को प्रशिक्षण के समापन तक, स्वागतयोग्य परिवर्तन दिखाई दिये। चाहे यह सामरिक ज्ञान को ग्रहण करने की बात हो अथवा शारीरिक स्टैमिना विकसित करना हो, परिणाम सामान्यतः चौकाने वाले थे। 20 यंग प्लाटून, प्रत्येक बटालियन की एक प्लाटून, माओवादियों की चुनौती से लड़ने के लिए कमर कस चुकी थी। उन्हें उनकी कम्पनियों में वापस इस निर्देश के साथ भेज दिया गया कि वे अपने परिचालनिक क्षेत्र में चिन्हित लक्ष्य का पीछा करेगें। उन्हें यह भी निर्देश दिया गया कि वह दैनिक प्रकार की सुरक्षा संबधी ड्यूटियों से बचे तथा अपना ध्यान सकिय परिचालनिक ड्यूटि पर लगायें। साथ ही प्लाटून की सघनता और सत्यनिष्टा को बरकरार रखते हुए बलों के मध्य टीम भावना व सौहार्द को बढ़ाने का काम करें।

सभी 120 परिचालनिक कम्पनियों में यंग प्लाटून को समय से तैयार करने के लिए दिसम्बर ' 2017 के अंत तक ग्रुप केन्द्र, राँची में एक और नोड प्रशिक्षण के लिए विकसित किया गया। इन 04 प्रशिक्षण नोड्स् में अभी तक 06 बेचो में कुल 130 प्लाटून (प्रति कम्पनी एक तथा 10 प्रशिक्षण कम्पनियों) को उक्त प्रशिक्षण सफलतापूर्वक दिया जा चुका है। झारखण्ड सेक्टर का यह प्रयास है कि बचे हुए 10 यंग प्लाटून को अगले कुछ दिनों में प्रशिक्षण दिया जाए, जिससे कि 140 यंग प्लाटून , राज्य में तैनात प्रत्येक जीडी कम्पनी में एक प्लाटून को खडी करने के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

युवाओं का प्रहार

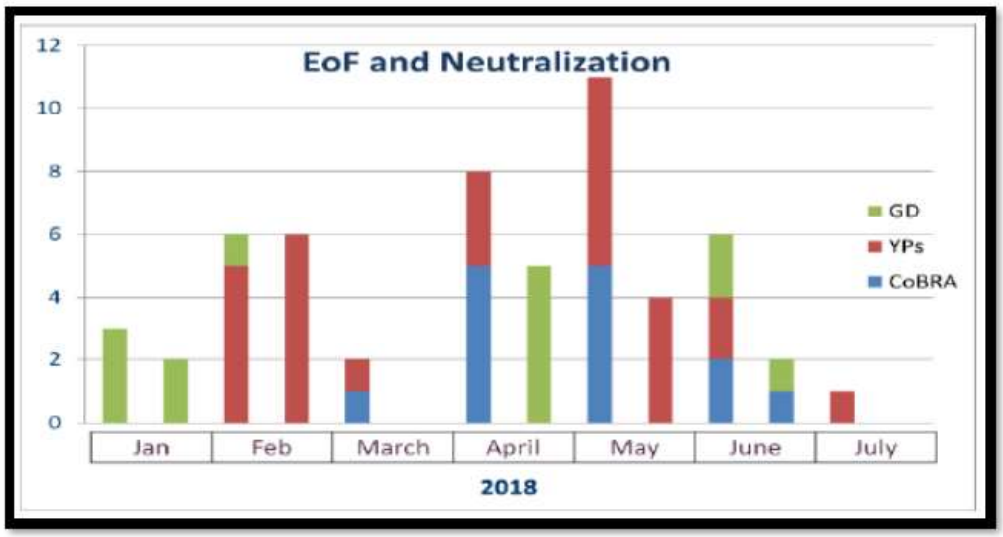

यहाँ यह स्पष्ट था कि इस प्रशिक्षण से युवा वर्ग के लिए कौशलता को प्राप्त करने हेतु एक प्रयास था जो कि स्मरणीय है। यह केवल समय की बात थी कि युद्ध क्षेत्र में उनकी व्यावसायिकत तथा वीरता बहुत जल्द लिट्मस टेस्ट से गुजरने वाली थी। फिल्ड से प्राप्त हुई प्रतिध्वनि अत्यधिक आशाजनक और परिपूर्ण थी। इन नई खड़ी की गई 157 बटालियन की यंग प्लाटूनों में से एक के साथ दिनाँक 07 फरवरी ' 2018 को खूँटी जिले में मुठभेड़ हुई, जिसमें माओवादियों को अपनी जान बचाकर भागना पड़ा।

अगला ही दिन 08 फरवरी ' 2018 एक ऐतिहासिक दिन था। विशिष्ट सूचना पर 134 बटालियन की यंग प्लाटून लगभग 1415 बजे पलामू जिले में माओवादियों का पीछा कर रही थी और थोड़े ही समय में उनकी मुठभेड़ हो गई। टीम की बेहतर रणनीति के आगे माओवादियों को पस्त होना पड़ा और अपने आप को बचाने के लिए घटना स्थल से भागना पड़ा। परिणाम से संतुष्ट न होते हुए हमारी टुकड़ी ने उनका पीछा करने का फैसला किया। कुछ ही घंटो में उसी ग्रुप के साथ पुनः गोलीबारी शुरू हुई, जिसमें 02 माओवादी मारे गये और एक घायल महिला माओवादी पकड़ी गई। भारी मात्रा में हथियार तथा गोला बारूद बरामद किये गये। यह न केवल उनके मजबूत चरित्र को दिखाता है, बल्कि उनके धैर्य और दृढ़ता को भी दर्शाता है, क्योंकि वे लम्बे अंतराल की मुठभेड़ की संभावना वाले युद्ध की चूनौति को स्वीकार करने के लिए मानसिक रूप से तैयार थे। माओवादियो को परास्त करने का अगला अवसर दिनाँक 26 फरवरी ' 2018 को प्राप्त हुआ, जिसमें जिला पलामू में सब जोनल कमांडर राकेश भूईयाँ सहित 04 माओवादियों को मार गिराया गया, जबकि 387 राउन्ड सहित 02 एस.एल.आर. बरामद की गई। 28 मई ' 2018 को एक अन्य यंग प्लाटून ने एरिया कमांडर अमरजीत सहित 03 टी.पी.सी. कैडर को मार गिराया और 03 अन्य को (जिसमें एक घायल नक्सली भी शामिल था) पकड़ लिया गया। साथ ही बड़ी मात्रा में हथियार तथा गोलाबारूद बरामद किये गए।

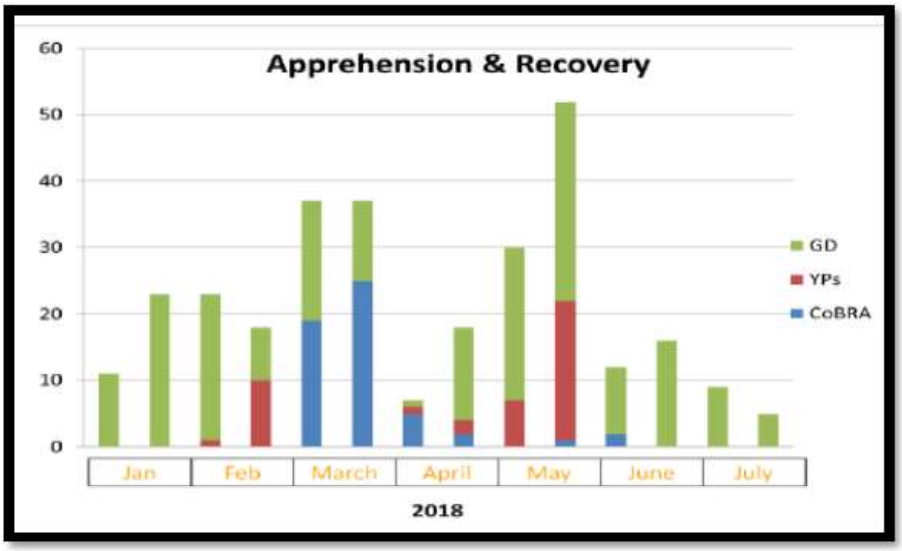

प्रहार की गूँज

यह उल्लेखनीय है कि वर्ष 2018 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के साथ हुई कुल 37 गोलीबारी की घटनाओं में से 18 का इन नई यंग प्लाटूनों ने मुकाबला किया, जिसमें इन प्लाटूनों ने कुल 19 माओवादिओं को मारा गया और 10 को पकड़ा। इस प्रकार इनकी सफलता का प्रतिशत 60 प्रतिशत से अधिक रहा।

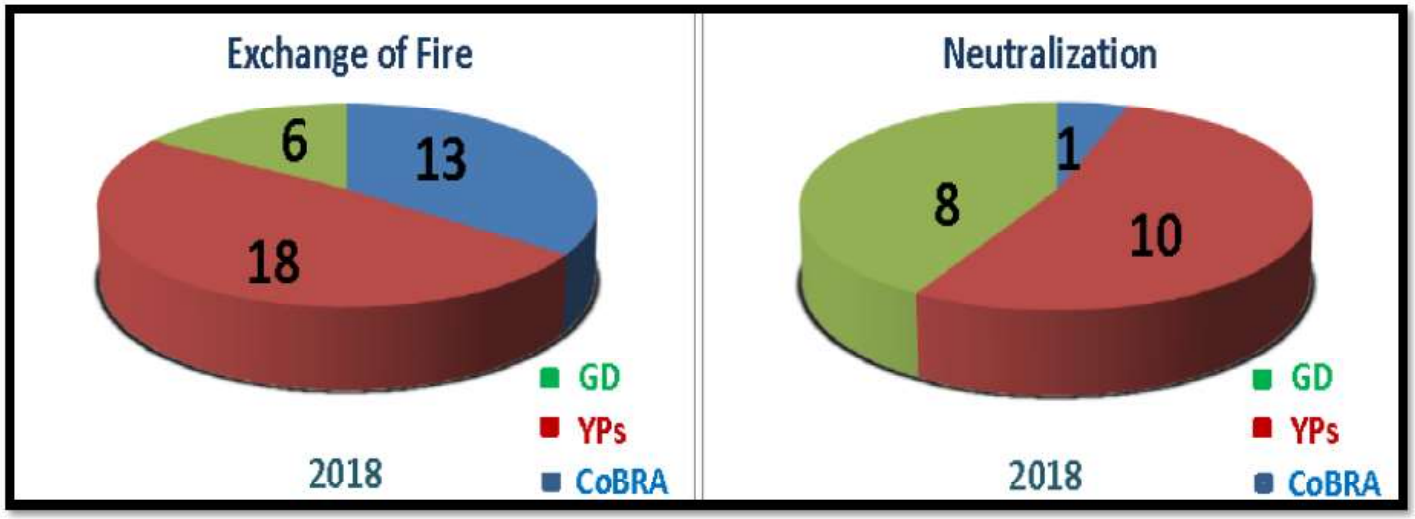

यंग प्लाटूनों द्वारा लड़े गये यह युद्ध आई.ई.डी. निष्क्रिय करने का बेहतर कौशल और हथियार को अच्छे तरीके से हैन्डल करने की योग्यता से युक्त थे, जो कि उन्होने व्यापक तथा बेहतर प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्राप्त किया। इन ऑपरेशनो के नतीजों से यह स्पष्ट था कि तुलनात्मक रूप से इन प्लाटून में बेहतर फायर कन्ट्रोल तथा फायरिंग कौशल था। इन टुकड़ियों के जॉबाजों ने रेडियो आपरेटर के साथ मिलकर आपरेशन के दौरान संचार उपकरणों को असाधारण तरीके से उपयोग करने का परिचय दिया।

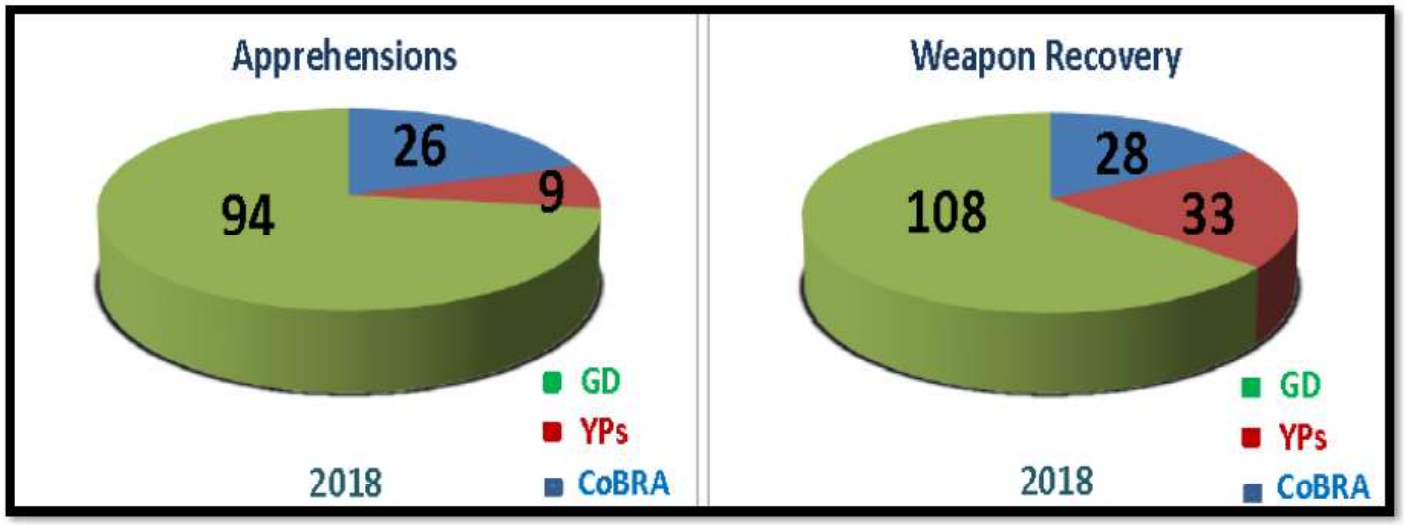

दृढ़ अनुमान

संक्षेप में, न केवल यूनिट की परिचालनिक क्षमता बढ़ी है, बल्कि समग्र रूप से परिचालन की तैयारी भी मजबूत हुई है। फिल्ड फारमेशन से इनके पराक्रम के बारे में बेहतरीन फीडबैक प्राप्त हुआ । फिल्ड कमांडरों ने अपनी यंग प्लाटूनों की क्षमताओं पर दृढ़ विश्वास व्यक्त किया है। वर्तमान समय में युवा सिपाही, माओवादी प्रभाव को समाप्त करने के लिए आदर्श उत्प्रेरक के रूप में काम कर रहे हैं और वे प्रशंसा के पात्र हैं। उनके सामने, आने वाले दिनों में राज्य में शान्ति बनाये रखने की चुनौति है और हमें आशा है कि सभी कम्पनियों में यंग प्लाटून खड़ी करने के प्रयास से आने वाले दिनों में जीडी बटालियनों के परिचालनिक प्रदर्शन में वृद्धि होगी।